



तबला वादक उस्ताद मंजू खाँ की शिक्षण प्रविधि व उनके प्रमुख शिष्य

- डॉ. वन्दना शर्मा¹
- विक्रम²

सारांश

यह शोध पत्र भारतीय शास्त्रीय संगीत की तबला वादन परंपरा के एक महत्वपूर्ण अंग 'अजराड़ा घराना' तथा इसके प्रमुख प्रतिनिधि उस्ताद मंजू खाँ की शिक्षण प्रणाली का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अजराड़ा घराना अपनी विशिष्ट वादन शैली, लय की जटिलता तथा उँगलियों के अनूठे प्रयोग के कारण अन्य घरानों से भिन्न पहचान रखता है। उस्ताद मंजू खाँ की शिक्षण प्रणाली अत्यंत सरल, व्यवस्थित तथा शिष्य-केंद्रित थी। उन्होंने परंपरागत गुरु-शिष्य प्रणाली को बनाए रखते हुए आधुनिक दृष्टिकोण को अपनाया और सभी विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान किया। उनकी शिक्षण प्रक्रिया में प्रारंभिक श्रवण, अभ्यास की निरंतरता तथा मंचीय अनुभव को अत्यधिक महत्व दिया गया।

यह शोध अजराड़ा घराने की परंपरा, उसके तकनीकी एवं शैक्षणिक पक्ष तथा उस्ताद मंजू खाँ के योगदान को स्पष्ट करता है, जो भारतीय संगीत परंपरा के संरक्षण एवं विकास में महत्वपूर्ण का निभाता है।

मुख्य शब्द: तबला वादन, भारतीय संस्कृति, अजराड़ा घराना, गुरु शिष्य परम्परा

भारतीय शास्त्रीय संगीत में तबला वादन की परंपरा विभिन्न घरानों के माध्यम से विकसित हुई है। प्रत्येक घराने की अपनी विशिष्ट शैली, तकनीक और शिक्षण प्रणाली होती है। इन्हीं में से एक प्रमुख घराना 'अजराड़ा घराना' है, जो दिल्ली घराने की शाखा होते हुए भी अपनी मौलिकता और विशिष्टता के कारण अलग पहचान रखता है।

“इस घराने को यदि दिल्ली घराने की निकटतम शाखा कहें तो अनुचित न होगा। दिल्ली के निकट मेरठ जनपद में एक गाँव है, जिसका नाम अजराड़ा है वहाँ के दो मूल निवासी दो भाई कल्लू खाँ व मीरु खाँ ने दिल्ली आकर उस्ताद सिध्दार खाँ दाड़ी के पौत्र सिताब खाँ से तबला की विधिवत शिक्षा प्राप्त की और शिक्षा पूर्ण होने पर अपने गाँव वापिस चले गए।”

¹ असिस्टेंट प्रोफेसर, मंच कला विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

² शोधार्थी, मंच कला विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान (पत्राचार लेखक)

यहीं से अजराड़ा घराने की नींव पड़ी। लगभग सन“ 1940 ई० से उस्ताद शमू खाँ के पुत्र उस्ताद हबीब उद्दीन खाँ संगीत जगत में प्रसिद्ध हुए और उनका वादन काल लगभग दो ढाई दशकों तक ही रह सका। हबीब उद्दीन खाँ ने उस्ताद मुनीर खाँ से भी शिक्षा प्राप्त की थी। खाँ साहब के हाथों में वह जादू था कि जहाँ वे बजाते थे बेजोड़ बजाते थे। वे सोलो की अपेक्षा संगत करने में अधिक निपुण थे। परन्तु कुछ ही वर्षों में उन्हें लकवा हो गया तथा 1965 के बाद उनका वादन शिथिल हो गया। सन 1972 में इस लोक से चले गये। ”

अजराड़ा घराने की आधुनिक पहचान गढ़ने में उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ का नाम सर्वोपरि है। वे एक ऐसे विलक्षण साधक थे जिन्होंने परंपरा को न केवल जीवित रखा, बल्कि उसे नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। उनकी शिक्षा का आधार बहुआयामी था; उन्होंने अपनी प्रारंभिक तालीम अजराड़ा परंपरा में ली, लेकिन बाद में दिल्ली के दिग्गज उस्ताद नत्थू खाँ और फरूखाबाद के उस्ताद मुनीर खाँ से भी संगीत के गूढ़ गुर सीखे। उनके वादन में इन विभिन्न शैलियों का एक ऐसा सुंदर समावेश मिलता है, जो सुनने वालों को मंत्रमुग्ध कर देता है।

उनकी सुप्रसिद्ध रचना 'घेतग घेतग धिनना नागिन' में वे बाएं (डगगे) और दाएं के बीच ऐसा अद्भुत संतुलन बिठाते थे कि निकलने वाली ध्वनि हबहू कबूतर की 'गुटरगूँ' जैसी प्रतीत होती थी। यह निकास उनकी सूक्ष्म पकड़ का प्रमाण है।

बंद मुट्ठी से बजाई जाने वाली 'धिरधिर' की तैयारी में उनका कोई सानी नहीं था। उनकी उंगलियों की स्पष्टता और वेग आज भी डिजिटल प्लेटफॉर्म पर शोध और विस्मय का विषय है।

अजराड़ा की शिक्षण प्रविधि अत्यंत सूक्ष्मता और निरंतर अभ्यास पर टिकी है। यहाँ गुरु केवल बोलों को रटवाते नहीं, बल्कि 'निकास' (ध्वनि उत्पन्न करने का ढंग) और 'वजन' (प्रहार की शक्ति) की बारीकियों पर बल देते हैं। इसी कारण अजराड़ा शैली का वादन सुनने में जितना

मधुर और लयकारी से भरपूर है, सीखने में उतना ही चुनौतीपूर्ण और तकनीकी रूप से समृद्ध माना जाता है।

उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ के पश्चात उस्ताद मंजू खाँ इस घराने के प्रमुख प्रतिनिधि रहे हैं, जिन्होंने न केवल इस परंपरा को जीवित रखा, बल्कि उसे नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। उनकी शिक्षण प्रणाली अत्यंत प्रभावशाली, व्यवस्थित और शिष्य-उन्मुख थी।

उस्ताद मंजू खाँ की तालीम

उस्ताद मंजू खाँ का जन्म 1950 ईस्वी में मेरठ में हुआ। बचपन में ही उन्होंने अपने ताया अजीजुद्दीन से तालीम शुरू की उसके पश्चात पिता हबीबुद्दीन खाँ के अलावा पं. राम परवेज़ व उस्ताद आमिर हुसैन खाँ (फरूखाबाद घराना) से भी शिक्षा प्राप्त की। इसके अलावा उन्हें कुछ रचनाएं उस्ताद अफाक हुसैन खाँ (लखनऊ घराना) व पं. सामता प्रसाद से भी कुछ खास बंदिशें सीखने को मिलीं।

खाँ साहब के पास अजराड़ा के अलावा अन्य घरानों की रचनाओं का भी भण्डार था। उनकी तालीम में वह चहुँमुखी रंग साफ देखने को मिलता था।

उस्ताद मंजू खाँ ने अंतिम के 15-10 वर्षों में अधिकतर तबला सिखाने का काम किया फिर वह कार्यक्रमों में कम शिरकत करते थे। उस्ताद मंजू खाँ ने बहुत सारे सामर्थ्य शिष्यों को तालीम दी व उन्हें तबला के क्षेत्र में सफल बनाया। खाँ साहब के शिष्यों की एक लंबी सूची है। उनकी शिक्षण प्रविधि का अवलोकन निम्नलिखित तथ्यों के आधार पर किया जा सकता है।

शिक्षण प्रविधि

1. शिष्य चयन- अमूमन बड़े गुरुओं में देखा जाता है कि वो किसी को शिष्य स्वीकार करने से पहले उसकी न्यूनतम योग्यता का आकलन करते हैं। उसके बाद ही वह शिष्य को स्वीकार करते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि संगीत बहुत ही कठिन कार्य है। इसमें यदि ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा न हो तो सफल होना एक बहुत कठिन कार्य है।

इसलिए आरंभ में ही गुरु शिष्य की योग्यता का आकलन करते हैं जिससे सीखने और सिखाने वाले दोनों का समय और ऊर्जा व्यर्थ न हो।

उस्ताद मंजू खां ने अधिकतर शिष्यों को व कम न्यूनतम योग्यता वाले शिष्यों को भी सहर्ष स्वीकार किया।

उनके वरिष्ठ शागिर्द अतहर हुसैन के अनुसार उनके "शरण आकर संगीत से अनजान व्यक्ति भी कलाकार बन "जाता था।

उस्ताद मंजू खां ने छोटे बच्चों से लेकर बड़ी उम्र के शागिर्दों को भी तालीम दी। उनकी तालीम सिलसिलेवार व घरानेदार थी। खां साहब ने शिष्यों में कभी भेदभाव नहीं किया उन्होंने सभी शिष्यों को योग्यतानुसार तालीम दी। तालीम देते समय वह शीतल मन से सबको सिखाते थे उन्होंने कभी किसी शिष्य पर क्रोध नहीं किया।

2. उदार स्वभाव- खां साहब का उदार स्वभाव सभी बड़े व अच्छे साथी कलाकार जानते हैं। उन्होंने गरीब से गरीब शिष्यों को भी स्वीकार किया। गुरुदक्षिणा वहन न कर सकने वाले विद्यार्थियों को कभी सीखने के लिए मना नहीं किया।

उस्ताद मंजू खां ने तालीम देने में भी हमेशा उदारता दिखाई। शिष्य की योग्यतानुसार घरानेदार बंदिशें व रचनाएं सिखाने में उन्होंने कभी संकोच नहीं किया। यही कारण है कि उनका शिष्य परिवार बहुत बड़ा है।

3. समदृष्टि- गुरु वही बड़ा होता है जो शिष्यों को समान दृष्टि से देखे व उनमें भेदभाव न करे। यद्यपि संस्कार में हर व्यक्ति की योग्यता व क्षमता भिन्न होती है किंतु उसके अनुसार जो गुरु शिक्षा प्रदान करते हैं व धीमे सीखने वाले छात्रों पर अतिरिक्त ध्यान देते हैं वही सच्चा गुरु कहा गया है।

उस्ताद मंजू खां में यह सभी गुण मौजूद थे उन्होंने सभी शिष्यों को प्यार से व योग्यतानुसार शिक्षा दी।

4. प्रारंभिक तालीम- किसी भी क्षेत्र में पहला सबक जीवन में बहुत महत्वपूर्ण होता है। उसी के आधार शिला पर जीवन रूपी इमारत खड़ी होती है। संगीत में भी पहले सबक का उतना ही महत्व है। पुराने समय में गुरु शिष्यों को आरंभ में केवल तबला सुनने को कहते थे जब शिष्यों के कानों में तबले की ध्वनि अच्छी तरह समाहित हो जाए और वे साज़ को और वादक के हाव भाव का अच्छी तरह से अवलोकन कर लें उसके पश्चात तालीम आरंभ करते थे। इससे शिष्यों को तबले से उत्पन्न ध्वनि का सही से अवलोकन करने का पर्याप्त समय मिल जाता था। ना, ता, ति, तिट, धिर, तिर जैसे नादों की उत्पत्ति के माधुर्य का ज्ञान हो जाता है। इसके विपरीत यदि कोई भी शिष्य गुरु के साथ पहली ही भेंट से बजाना शुरू कर देता है तो वह आधे अधूरे अवलोकन व हाथ की नकल-से ध्वनियाँ उत्पन्न करने की कोशिश करता है। ऐसा करने से हाथ में विकार आने की संभावना ज्यादा बन जाती है।

खां साहब भी कुछ हफ्तों तक शिष्यों को कक्षा में बिना हाथ के बिठाते थे ताकि वे दूसरे शिष्यों के भी वादन करते हुए देखें और उन्हें तालीम व तबले की अच्छे से जानकारी हो जाए। उसके बाद रुचि के अनुसार तबले पर बिठाया जाता था व आरंभ होता था पहला सबक।

पहला सबक आरंभ होने से पहले ही शिष्यों को तबले के सभी अंगों का ज्ञान कराया जाता था जैसे बर्तन, पुड़ी, गजर, स्याही, चांटी, मैदान आदि आदि।

खां साहब तबले पर सबसे पहले 'ता' या 'ना' की ध्वनि का अभ्यास करवाते थे। चूंकि छात्रों के कानों में ये ध्वनियाँ पहले से गुंजायमान होती थीं तो वे उन्हें आसानी से निकाल लेते थे। पहला सबक बस इतना ही होता था यह अभ्यास कक्षा के बाद फिर घर में करने को

कहा जाता था। लगातार एक हफ्ते 'ता' व 'ना' अभ्यास करके फिर गुरु के पास बैठकर दिखाना होता था। अगर 'ता' या 'ना' की ध्वनि सही है तो आगे का सबक मिलता था नहीं तो उसमें त्रुटियों को सही कर फिर एक हफ्ते के लिए वही रियाज़ करने को कहा जाता था।

इसके पश्चात दूसरे सबक में 'तिट' व 'गे' बोल से परिचय करवाया जाता है।

इन बोलों के हाथ में बैठ जाने पर शुरुआती कायदे जैसे 'घेघे तिट घेघे नाना' पर रियाज़ करवाया जाता था।

खां साहब 'धाधा तिट धाधा तूना' पर भी खूब रियाज़ करवाते थे। उनका कहना था कि तालीम धीरे-जल्दी में-धीरे होनी चाहिए न कि अधिक जल्दी, क्योंकि हस्त साधन तबला में अत्यंत महत्वपूर्ण है, इसलिए जब तक हस्त साधन अच्छे से नहीं हो जाता तब तक शुरुआती दो या तीन कायदों पर ही साधना करनी चाहिए।

5. गंडा बंधन व घरानेदार तालीम- संगीत में 'गंडा-बंधन' रस्म गुरु-शिष्य के पवित्र रिश्ते का प्रतीक है। यह एक महत्वपूर्ण आयाम है जो गुरु शिष्य के रिश्ते को और मजबूत करता है।

रस्म के शिष्य औपचारिक रूप से अपने गुरु से संगीत की शिक्षा ग्रहण करने का संकल्प लेते हैं।

इस रस्म में गुरु शिष्य की कलाई पर मौली बाँधकर गुड़ और चना खिलाते हैं। बड़े कलाकारों की उपस्थिति में यह रस्म होती है। रस्म से पहले शिष्य की मंच प्रस्तुति भी होती है।

उस्ताद मंजू खां भी इस रस्म को बखूबी निभाते थे। खां साहब का कहना था कि यह एक ऐसी रस्म जिसमें गुरु और शिष्य दोनों का सीखने और सिखाने का कर्तव्य जुड़ जाता है।

खां साहब के अनुसार रस्म में खिलाया जाने वाला गुड़ व चना मेहनत व मेहनत के फल का प्रतीक है। चना

विद्यार्थी को मेहनत के लिए मेहनत करने का प्रेरक है और गुड़ मेहनत के बाद जो फल मिलता है उसका परिचायक है।

खां साहब भी शागिर्दी की रस्म अपने साथी कलाकारों व शिष्य के माता पिता की उपस्थिति में- करते थे। सभी बुजुर्ग कलाकारों को याद करके व साथी कलाकारों से इजाज़त लेकर यह रस्म निभाई जाती थी। गंडा बंधन के पश्चात गुरु का कर्तव्य हो जाता है शागिर्द को चहुँमुखी व घरानेदार तालीम देना।

गंडाबंधन के पश्चात शागिर्द को अजराड़ा घराने की खास बंदिशें जिनमें कायदे, गते रेले आदि सब सिखाए, इसके अलावा अन्य घरानों की प्रमुख रचनाएं, जाते हैं भी सिखाई जाती थी। उस्ताद मंजू खां हर घराने का आदर करते थे व उसकी तालीम भी शिष्यों को देते थे।

6. संगत की तालीम- खां साहब का तबला वादन चहुँमुखी था। एकल वादन के अलावा उन्हें संगत में भी महारत हासिल थी। संगत में भी उन्हें सभी विधाओं के साथ वादन में निपुणता प्राप्त थी। शास्त्रीय संगीत में वाद्य संगीत, कंठ संगीत व नृत्य के अलावा गजल, कव्वाली में भी उन्होंने खूब संगत की। इसी कारण उनकी तालीम पाने वाले शिष्यों में भी यह गुण दिखता है।

खां साहब बड़े-बड़े कलाकारों की सीडी, कैसेट्स भी सुनते थे और शिष्यों को ध्यान से अवलोकन व श्रवण करने को कहते थे। ऐसा करने से शिष्यों को विभिन्न शैलियों की जानकारी होती है जो उनके लिए बाद में बहुत सहायक होती है।

संगीत श्रवण व अवलोकन -

उस्ताद मंजू खां अपने सभी शिष्यों को आसपास में हो रहे विभिन्न सांगीतिक कार्यक्रमों में जाकर बड़े कलाकारों को सुनने व देखने को कहते थे। स्वयं भी वह विभिन्न सांगीतिक कार्यक्रमों में शिरकत करते थे। इसके अलावा अपने कार्यक्रमों में भी वे शिष्यों को लेकर जाते

थे व कई शिष्यों को अपने साथ मंच पर बैठने का अवसर भी देते थे।

वे अपने शिष्यों के साथ बैठकर बड़े बड़े उस्तादों-की रिकॉर्डिंग सुनते थे और फिर उनके वादन का गहराई से विश्लेषण करते थे।

एक बार अजराड़ा घराने का प्रसिद्ध और कठिन कायदा सिखाते "घिड़नग धिन धागेनागे धिन धागेतिट" समय उन्होंने एक बहुत बड़ी बात कही। उन्होंने हाथ से "बाएं" समझाया कि तबले का असली निकास होता है। यदि बाएं हाथ पर वजन और बोल सही नहीं हैं, तो दाएं हाथ का वादन भी कभी सही नहीं हो सकता। वे मानते थे कि तबले का सारा राज बाएं हाथ की तैयारी में छिपा है, जबकि अक्सर लोग केवल दाएं हाथ पर ही ध्यान देते हैं।

7. आधुनिक विचारधारा- खां साहब का ताल्लुक खानदानी परंपरा से होने के बावजूद भी उनकी विचारधारा आधुनिक थी। खां साहब को कई पुराने गुरुओं व उस्तादों की तरह बंदिशें, रचनाएं छुपाने की आदत नहीं थी। जिस तरह पुराने गुरु कुछ घरानेदार व खास बंदिशें केवल अपने पुत्रों या भतीजों के लिए छुपाकर रखते थे, खां साहब बिल्कुल भी ऐसा नहीं करते थे।

उनका दिल खुली किताब की तरह था जो विद्यार्थी जितना ले सका वो अपनी क्षमतानुसार पाता गया, गुरु की संकीर्णता उसमें कभी बाधा नहीं बनी।

खां साहब ने स्कूली पढ़ाई पर विशेष ध्यान देने को प्रेरित किया। उन्होंने कभी भी शिष्यों को स्कूली पढ़ाई छोड़ने या उसको व्यथा नहीं कहा।

खां साहब का कहना था कि तबला की तालीम के साथ आप की स्कूली शिक्षा कदम कदम पर आपकी-सहायता करेगी व जीवन में आगे बढ़ने में मददगार साबित होगी।

उस्ताद मंजू खां के प्रमुख शिष्य -

अतहर हुसैन -

अतहर हुसैन, उस्ताद मंजू खां के सबसे वरिष्ठ और समर्पित शागिर्दों में गिने जाते हैं। संगीत के प्रति उनका झुकाव बचपन से ही अटूट था, यही कारण है कि मात्र सात साल की अल्पायु में उन्होंने तबला वादन की कठिन तालीम लेना शुरू कर दिया था। उनकी शिक्षा की नींव उनके मामा, उस्ताद शान ए अहमद खां (अजराड़ा घराना) के सानिध्य में रखी गई। दो वर्षों तक बुनियादी बारीकियां सीखने के बाद, उनके जीवन में एक नया मोड़ आया जब वे महान संगीतज्ञ उस्ताद मंजू खां साहब की शरण में आए। तब से लेकर आज तक, वे खां साहब के आदर्शों और उनकी शैली के प्रति पूरी तरह समर्पित रहे हैं।

अतहर हुसैन के अनुसार, उस्ताद मंजू खां के सिखाने के तरीके में एक रूहानी 'तासीर' (असर) थी। वे मानते हैं कि जब उस्ताद का आशीर्वाद शिष्य को मिल जाता है, तो सफलता के मार्ग स्वयं खुल जाते हैं।

उनका सिखाने का तरीका अत्यंत सहज और सरल था, जिससे कठिन से कठिन 'ताल' भी आसान लगने लगती थी। वे हमेशा प्यार और स्नेह के साथ संगीत की शिक्षा देते थे।

उन्होंने अजराड़ा घराने की शुद्धता और प्राचीन परंपराओं को न केवल जीवित रखा, बल्कि उन्हें नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया।

कलात्मक कौशल और प्रदर्शन -

अतहर हुसैन स्वयं को सौभाग्यशाली मानते हैं और कहते हैं कि वे खां साहब की उस 'अनूठी तालीम' के लिए सदैव उनके ऋणी रहेंगे।

आज अतहर हुसैन केवल भारत में ही नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर पर तबला वादन का एक जाना-माना नाम

हैं। उन्होंने अपनी कला का प्रदर्शन अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा अन्य यूरोपीय और एशियाई देशों में किया है।

उन्होंने संगीत जगत के महान दिग्गजों जैसे गुलाम अली साहब और पंडित जसराज जी के साथ संगत की है। उनकी संगत में जो ठहराव और लयकारी दिखती है, वह उस्ताद मंजू खां की ही देन है। उनकी कला न केवल मनोरंजन करती है, बल्कि अजराड़ा घराने की समृद्ध विरासत को दुनिया भर में गौरवान्वित करती है।

अमान अली खान -

अमान अली खान, उस्ताद मंजू खां साहब के अत्यंत प्रिय और खास शागिर्दों में से एक हैं। उनकी संगीत साधना का सफर वर्ष 1992 में शुरू हुआ, जब उन्होंने खां साहब की छत्रछाया में विधिवत शिक्षा ग्रहण करना आरंभ किया।

अपने गुरु से मिली ठोस तालीम के बल पर अमान अली खान ने तबला वादन के क्षेत्र में अपना एक अलग और सम्मानजनक मुकाम हासिल किया है।

उन्होंने भारत के साथ-साथ इंग्लैंड और यूरोप के कई प्रमुख देशों में अपनी कला का प्रदर्शन कर वाहवाही बटोरी है। उन्होंने संगीत जगत की मशहूर हस्तियों जैसे शुभा मुद्गल, आबिदा परवीन और पंडित राजेन्द्र प्रसन्ना के साथ संगत की है।

परवेज़ हुसैन -

परवेज़ हुसैन, जो कि प्रसिद्ध तबला वादक अतहर हुसैन के भाई हैं, उस्ताद मंजू खां के अत्यंत प्रभावशाली शिष्यों में गिने जाते हैं। उनकी संगीत यात्रा भी घर से ही शुरू हुई, उन्होंने सबसे पहले अपने मामा, उस्ताद शाने अहमद से तबला वादन की बारीकियां सीखीं। कई वर्षों तक अपने मामा से प्रारंभिक शिक्षा लेने के उपरांत,

वे अपने भाई अतहर हुसैन के पदचिन्हों पर चलते हुए उस्ताद मंजू खां साहब के शागिर्द बन गए।

अपने गुरु से मिली इसी दुर्लभ तालीम के कारण परवेज़ हुसैन ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है

उन्होंने भारत के अतिरिक्त अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और कनाडा जैसे देशों में तबला वादन की शानदार प्रस्तुतियाँ दी हैं।

वे मशहूर गज़ल गायक गुलाम अली, तलत अज़ीज़, शुभा मुद्गल और पंडित राजेन्द्र प्रसन्ना जैसे महान कलाकारों के साथ मंच साझा कर चुके हैं।

उन्होंने जेज़िम शर्मा, पृथ्वी गंधर्व और हेमंत बृजवासी जैसे कलाकारों के साथ भी सफलतापूर्वक संगत की है।

अनिल शर्मा व सुधीर शर्मा -

अनिल शर्मा और सुधीर शर्मा दोनों सगे भाई हैं और संगीत की दुनिया में उनका सम्मानजनक स्थान है। दोनों भी अमृतसर के निवासी हैं। इन दोनों भाइयों की संगीत यात्रा उनके पिता, बालकृष्ण बालि के मार्गदर्शन में शुरू हुई। उनके पिता स्वयं उस्ताद हबीबुद्दीन खां के शिष्य थे। दिलचस्प बात यह है कि उस्ताद मंजू खां साहब ने भी सुधीर शर्मा के पिता से कुछ तालीम हासिल की थी, जो उनके बीच के गहरे आपसी सम्मान को दर्शाता है।

पिता के देहांत के बाद दोनों ने मंजू खां साहब से विधिवत शिक्षा लेनी शुरू की।

दिल्ली आना-जाना लगातार लगा रहता था। इतना ही नहीं, उन्होंने कई बार खां साहब को अमृतसर और लुधियाना अपने निवास स्थान पर आमंत्रित किया, जहाँ उस्ताद जी कई-कई दिनों तक उनके घर रुककर उन्हें

संगीत की बारीकियां सिखाते थे। वर्तमान में सुधीर शर्मा व अनिल शर्मा कॉलेज में तबला इंस्ट्रक्टर के पद पर कार्यरत हैं और नई पीढ़ी को इस कला से जोड़ रहे हैं।

उस्ताद मंजू खां की शिक्षण पद्धति और तकनीकी ज्ञान सुधीर शर्मा व अनिल शर्मा के अनुसार, खां साहब का सिखाने का तरीका बेहद वैज्ञानिक और विश्लेषण पर आधारित था

संदर्भ सूची

1. राम, सुदर्शन. (2008). तबले के घराने वादन शैलियाँ एवं बंदिशे. दिल्ली : कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रिब्यूटर्स, पृ. सं. -41

2. मिस्त्री, आबान ई. (2000). पखावज और तबला के तंत्र एवं परम्परायें, मुम्बई : स्वर साधना समिति, पृ.सं.-140

साक्षात्कार सूची -

कलाकार : मास्टर मदन, पंडित गजेंद्र शिवालकर, विदुषी लक्ष्मी मिश्र, बटुक नाथ मिश्रा, विनोद गंधर्व

परिवार : फिरदोस खां पत्नी, पुत्र आमिल व कामिल खां

शागिर्द : अतहर हुसैन, अमान अलि, सुधीर शर्मा, फरदीन हुसैन, समीर खां, संजय घाघट, सर्वप्रिये गुप्ता।